आवश्यक निवेदन

जीवस्थान षट्खण्डागमका प्रथम खण्ड है। उसके क्षेत्र, स्पर्शन और काल क्रमशः तीसरा, चौथा और पाँचवां ये तीन अनुयोगद्वार हैं। इनके पहले सत् और संख्या इन दो अनुयोगद्वारोंका हम संशोधनपूर्वक सम्पादन कर चुके हैं। किन्तु विशेष अस्वस्थ रहने के कारण प्रथम पुस्तकको छोड कर उनमें किये गये संशोधनोंका दिग्दर्शन हम नहीं करा पाये हैं। इन पाँचों अनुयोगद्वारोंका अनुवाद हम और स्व. श्री. पं. हीरालालजी सि. शा. ने मिलकर किया था। इतना अवश्य है कि जब इस चौथी पुस्तकका अनुवाद होकर मुद्रण हो रहा था तब परिस्थितिवश हमने इस कार्यसे निवृत्त होना ही उचित समझा। फलस्वरूप कुछ काल तक हम षट्खण्डागम धवलाकी अनुवाद प्रक्रियासे समुचित योगदान न कर पाये। इतना अवश्य है कि जिस समय षट्खण्डागम धवलाका अनुवाद होकर प्रकाशन हो रहा था तब तक मूडबिद्रीके सिद्धान्त मन्दिरमें स्थित ताड़पत्रीय प्रक्रियाँ उपलब्ध होकर उनके फोटो प्रिंट नहीं हो पाये थे। किन्तु अब उनके फोटो प्रिंट उपलब्ध होनेसे पुनर्मुद्रणके कार्यमें हम उनका समुचित उपयोग इसलिये नहीं कर पा रहे है, क्योंकि, उनके आधारसे जो टिप्पण लिखाये गये हैं उन्हीं पर हमें निर्भर रहना पडता है। सत्प्ररूपणाकी प्रथम पुस्तकके संशोधनके समय जिस विधिसे हमने फोटो प्रिंटोंका उपयोग कर कतिपय आवश्यक संशोधन करनेमें हम समर्थ हुए थे वह स्थिति पुनः नहीं बन पाई और मात्र फोटो प्रिंटोंके आधारसे लिये गये टिप्पणों पर ही हमें निर्भर रहना पडता है। अस्तु,

अब प्रकृतमें इस पुस्तकमें किये गये संशोधनोंके आधारसे विचार करना है। यद्यपि जिन टिप्पणोंके आधारसे हमने संशोधन किया था वे टिप्पण हमारे सामने नहीं हैं। फिर भी संशोधित प्रति हमारे सामने होनेसे उसके आधारसे संक्षेपमें विचार किया जाता है। ताकि पाठक इस पुस्तकमें किये गये कतिपय संशोधनोंसे अवगत हो सकें।

प्रथम संस्करण	पृ.	पं.	द्वितीय संस्करण	पृ.	पं.
णामपत्तिढ्डीणं	२८	५	णामपत्तिढ्डीणं	२८	६
प्राप्त नहीं हुई	२८	२०	प्राप्त हुई	२८	१२
सम्यग्दृष्टि मनुष्य	७५	१२	सम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्य	७५	१३
मिथ्यादृष्टि मनुष्य	७५	१५	मिथ्यादृष्टि उक्त मनुष्य	७५	१६
संयतासंयत मनुष्य	७५	१८	संयतासंयत उक्त मनुष्य	७५	१९
मनुष्य	७५	२०	सामान्य मनुष्य	७५	२१
तक मनुष्योंके	७५	२२	तक सामान्य मनुष्योंके	७५	२३
अपज्जत्ता च सत्थाण	१००	८	अपज्जत्ता च सव्वलोगे एवं णिगोद सुहुमणिगोद	१००	६–८

प्रथम संस्करण	पृ.	पं.	द्वितीय संस्करण	पृ.	पं.
			तेसिंपज्जत्तापज्जत्ताणं च बादरवणप्फदिकाइया बादरणिगोदा तेसिं पज्जत्तापज्जत्ता च सत्थाण–		
वनस्पतिकायिक स्वस्थान	१००	२७	वनस्पतिकायिक और सूक्ष्म	१००	२५
			वनस्पतिकायिक जीव तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सर्व लोकमें रहते हैं। इसी प्रकार निगोद जीव और सूक्ष्म निगोद जीव तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंको जानना चाहिये स्वस्थान।		२७
औदारिककाययोगका क्षेत्र	१०५	१६	औदारिककाययोगके साथ वैक्रियिक समुद्घातका क्षेत्र	१०५	१७
क्योंकि यहाँ	१०६	२५	क्योंकि मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके साथ	१०६	२४
विद्यमान	१०६	२५	होनेवाले	१०६	२५
स्थित जीवोंका	१०७	२२	स्थित सासादन और असंयम सम्यग्दृष्टि जीवोंका	१०७	२३
मनुष्य तिर्यंचोंमें	१०८	१७	मनुष्योंमें	१०८	१७
ओघक्षेत्रके समान है।	१११	२५	ओघक्षेत्रके लिये कही गई अपवर्तनाके समान है।	१११	२७
इसलिये	११५	१९	इसलिये उक्त पदवाले जीव	११५	१८
चदुट्ठाणमोघं	१२४	५	चदुट्ठाणी ओघं	१२४	५
णत्थि आहारित्ता	१३७	७	णत्थि तत्थ आहारित्ता	१३७	७
फुसणवसणे	१४१	८	फुसणघसणे	१४१	८
कलुषताके संम्मार्जन	१४१	१३	कलुषताके स्पर्शको संमार्जन करनेमें समर्थ	१४१	१३
अजीवो	१४२	२	अजिओ	१४२	२
ताव ओघेणेत्ति	१४५	६	ताव ओघेण भणामि त्ति ओघेणेत्ति	१४५	४
असंखेज्जगुणं	१४८	४	असंखेज्जगुणमेत्तं	१४८	४

प्रथम संस्करण	पृ.	पं.	द्वितीय संस्करण	पृ.	पं.
दुगुणकमेण	१५३	२	दुगुणगुणकमेण	१५३	२
गच्छेहि पुध	१५३	२	गच्छेहि पुधपुध	१५३	३
क्योंकि दुगुणे हुए स्थान पर चार रूपकी	१५३	२६	क्योंकि दुगुणे हुए स्थान पर पहलेके समुद्र या द्वीपके प्रथम वलयके प्रमाणसे अगले द्वीप या समुद्रके प्रथम वलयका प्रमाण दूना हो जाता है, उसमें चार रूपकी	१५३	२५
माणयणकरणादो	१५५	६	मवणयणकरणादो	१५५	७
शलाकाओंका आता है।	१५५	२४	शलाकाओंका अपनयन किया गया है।	१५६	२४
अण्णाइरिओ	१५७	२	पुव्वाइरिओ	१५७	३
रूपोंसे भाग	१६२	११	रूपोंसे व्यन्तरराशिमें भाग	१६१	२७
पञ्चेन्द्रियोंमेंहि	१६३	२४	पचेंन्द्रिय तिर्यंचोंमेंहि	१६३	१६
समस्तफलितमिति	१६९	२	समस्तफलमिति	१६८	६
गदेहि पंच	१७८	७	गदेहिं देसूणा पंच.	१७७	१३
उजुवलणा	१८०	३	उहढवलणा	१७९	५
(व)	१८०	६	व ण	१७९	८
(ण)	१८०	६	—	१७९	८
कधं विहारवदि सत्थाण परिणदाणं तिरिक्खाणं	१९२	५	कधं विहरंततिरिक्खाणं	१९१	११
खेत्तगुणिदेण	१९४	६	खेत्तगणिदेण	१९३	१०
खेत्तगुणिदेण	१९५	२	खेत्तगणिदेण	१९४	२
मजिदेसु	२००	३	भाजिदेसु	१९९	१
पज्जत्त-जोणिणीसु	२११	५	पज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्ख जोणिणीसु	२११	५
गमणादिविसन्ति	२१७	१	गमणादिविसेससत्ति	२१७	१
चदुपणालीसु	२१९	१	चदुपाणद्वीसु	२१९	२
पहाणत्तादो	२२०	१	पमाणत्तादो	२२०	१
भागो पोसिदो	२२१	२	भागो संखेज्जा भागा वा फोसिदा	२२१	२

ये कतिपय संशोधन है जो यहाँ दिये गये हैं। कार्य गुरुतर है। साथ ही इसके मुद्रणका स्थान भिन्न है, इसलिये कुछ ऐसे अपरिहार्य संशोधन रह जाते हैं, जिनके बिना संशोधित संस्करणको पूर्ण रूपसे शुद्ध कहना कठिन हो जाता है। इस बीच इस संस्थाके कर्मठ मन्त्री आ. काका बालचन्द देवचन्दजी शहाका स्वर्गवास होनेसे संस्थाकी जो अपूरणीय क्षति हुई है उसे पूरा करना असम्भव ही प्रतीत होता है। वे एक कर्मठ और प्रत्येक मामलेमें सतर्क कार्यकर्ता थे अपि तु उनका जिसके साथ जो सम्बन्ध चला आ रहा था उसका उचित अनुचित सभी अवस्थाओ का निर्वाह करना वे अच्छी तरहसे जानते थे। आज कल मन्त्रीके इस गुरुतर कार्यको मान्य से. रतनचन्दजी शहा देखते हैं। संस्थाके हित साधनसे इनकी विशेष रुचि होनेसे उसके योग्यताके साथ संचालनमें किसी प्रकारकी कमी नहीं होते पायेगी ऐसा हमें प्रतीत होता है।

संस्थाके कार्यालयका पूरा उत्तरदायित्व बन्धुवर पं. श्री. नरेन्द्रकुमारजी भिसीकरके उपर ही निर्भर है। उन्हें ही हिसाब-किताबसे लेकर पूरा कार्य देखना पडता है। प्रूफ देखना, प्रेसकी व्यवस्था करना, आगे किस ग्रन्थ आदिको मुद्रणके लिये प्राथमिकता दी जाय आदि सभी कार्योंका उन्हेंही निर्वाह करना पडता है। हमें प्रसन्नता है कि उनकी देख-रेखमें कार्यालयसम्बन्धी सभी कार्योका निर्वाह योग्यतापूर्वक हो रहा है।

यहाँ एक निवेदन अवश्य करना है कि मुद्रणके साथ प्रूफके देखनेमें जितनी सम्भव हो उतनी विशेष सावधानी अवश्य रखी जानी चाहिये। जिस समय द्वितीय संस्करणके लिये संशोधन-सम्पादनका कार्य मुझे सौंपा गया था उस समय स्व. प्रा. हीरालालजीकी यह इच्छा अवश्य थी कि इस द्वितीय संस्करणके लिये संशोधन-सम्पादनके साथ उसके मुद्रण आदि करानेका पूरा उत्तरदायित्व श्री. पं. फूलचंद्रजीके ही सुपुर्द कर दिया जावे, पर बीचमें कुछ ऐसे संस्थागत बाधक कारण थे जिससे मुद्रण आदि की व्यवस्था मेरी देख-रेखमें न हो सकी। इस प्रसंगसे जो व्यक्ति कार्यसिद्धिका विचार किये बिना जो भी मत बना लेता है उसे बदलना कठिन हो जाता है। यह तो अच्छा रहा कि मुद्रणकी व्यवस्था करना, प्रूफ पढनेकी व्यवस्था करना आदिसे मुक्त रखा गया है। यहाँ तो मात्र उस परिस्थितिका निर्देश मात्र किया है।

अन्तमें मैं संस्थाके वर्तमान यशस्वी मन्त्री सेठ रतनचन्दजी शहा और उक्त पंडीतजीका मैं इसलिये विशेष आभारी हूँ कि उनके सक्रिय सहयोगके कारण श्री षट्खण्डागम धवलाका आवश्यक संशोधन सम्पादनके साथ दूसरी बार मुद्रण हो रहा है।

फुलचन्द्र शास्त्री
७-७-८३